मशाल साक्षरता की

शोषण से लड़ने की नई ताकत

चिकर में दूधिया बारिश हुई थी और टीक तथा बांस के सघन वन दोपहर के सूरज में चमक रहे थे। पेड़ों से भरी पहाड़ियों को धुंध भरे बादलों ने ढका हुआ था। मटमैला-मिट्टी भरा पानी नालों में बह रहा था और नालों में उगी घास-फूस पानी को रोक रही थी। कीचड़ से होकर जीप गुजर रही थी और खतरनाक हिचकोले खा रही थी। जैसे ही जीप वनों से निकल कर आगे बढ़ी, चमचमाते हुए हरे-भरे खेत दिखाई देने लगे।

झोंपड़ियां बिखरी हुई थीं और चमकीली हरियाली में धंसी हुई थीं।

टूटी-फूटी सड़क से होते हुए हम चिकर पहुंचे। अपनी बैठक के लिए हमें देर नहीं हुई थी। अभी भी लोग आ रहे थे। लोग एक-एक करके खेतों के पार से, वनों से निकल कर और खतरनाक ढलानों से होते हुए आ रहे थे। हमारा सभा स्थल का पिछवाड़ा और बरामदा भर चुका था और तब तक बरसात भी थम चुकी थी। जब सब लोग बैठ गए तब एक अजीब चुप्पी छा गई। लोग मुझे देख रहे थे—बहुत ही चौकन्ने हो कर। ऐसी चुप्पी थी कि अगर कोई पत्थर फेंकता तो हवा शीशे की तरह चटख जाती। यह डांग्स जिले के उन बीस गांवों में से एक था, जिसे उस समय जिला प्रशासन, खासकर वन विभाग और पुलिस के साथ हुई हिंसक झड़पों के कारण 'अशांत' घोषित किया हुआ था। उन भावुक भीलों को अतिवादियों ने विद्रोह के लिए उकसाया था, जो अपने इस परंपरागत विश्वास पर अटल हैं कि जंगलों पर केवल उनका अधिकार है जो कि सदियों से चला आया है।

मजबूत बल

साक्षरता का अपने आप में कोई मतलब नहीं होता। साक्षर होने का अर्थ यह नहीं है कि आपको खाना, घर या नौकरी मिल जाएगी। परंतु सामाजिक या आर्थिक या सांस्कृतिक आंदोलन के संदर्भ में सक्रिय होने पर यह एक मजबूत बल है। शोषण के खिलाफ रक्षा का एक हथियार है। साक्षरता रचनात्मक भागीदारी के लिए एक औजार है। यह सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक जीवन में और अधिक समान भागीदारी के लिए एक पुल है। अगर कोई व्यक्ति साक्षर है तो वह प्रश्न पूछ सकता है। सूचना तक उसकी पहुंच हो सकती है और वह यह जान सकता है कि क्यों और कैसे उसका शोषण किया गया है।

अनदभाई का अनुभव

सबसे पहले अनदभाई बोले, जो लिखना-पढ़ना सीख रहे थे। उन्होंने कहा, "मैं एक गरीब आदमी हूं। मेरे सपने छोटे हैं। मेरी कोई महत्वाकांक्षा नहीं कि मैं किसी बड़े शहर में जाऊं, इसलिए कि मैं यहीं पैदा हुआ हूं। अगर आप डांग्स जैसे किसी स्थान पर पैदा हुए हों तो आप समझ सकते हैं कि इसका क्या मतलब होता है। ये वन, ये पहाड़ियां, ये आसमान, ये नदियां, ये झरने, ये प्यारी माटी, ये सब आप के जीवन का हिस्सा बन जाते हैं।

"इस कहानी का एक दूसरा हिस्सा भी है। अब वन हमारे नहीं रह गए हैं। हम यहां दुनिया के किनारे पर छायाओं की तरह रह रहे हैं। हमारा जीवन क्या है? एक संघर्ष। अपने हृदय और अपने मस्तिष्क से तो हम यहां के हैं, लेकिन हमारे शरीर एक युद्ध में झोंक दिये गए हैं। संघर्ष है कि जमीन को खोदो और ऐसा बनाओ कि उस पर खाद्यान्न उग सके। यह काफी नहीं है। हमें चीनी की फैक्टरियों में काम करने के लिए सूरत तक जाना पड़ता है। हम अपने कपड़े और कुछ अन्य चीजों को मुश्किल से कमा पाते हैं।

"मैं कठिन श्रम से नहीं डरता। पर उन लोगों के साथ मैं चल नहीं पाता। ये वे शिक्षित लोग हैं जो निरक्षर लोगों को मूर्ख समझते हैं। हम मूर्ख नहीं हैं। हम मनुष्य हैं और हमारी भी अपनी गरिमा है पर चूंकि हम निरक्षर हैं इसलिए हमारा जीवन कठिन है। चीनी फैक्टरियों के मालिक वेतन देने में हमें ठगते हैं। हम ऐसे लोग हैं जो बसों का नंबर तक नहीं पढ़ सकते।

"मैंने अपने हालात सुधारने के लिए साक्षर होना शुरू किया है। स्वयंसेवक मुझे मिला और उसने मुझे कक्षा में आने के लिए मनाया। लेकिन मैंने उससे पूछा, 'इससे मुझे फायदा क्या होगा? मैं इतना बूढ़ा हूं कि नहीं सीख सकता और फिर मेरे पास पढ़ने के लिए समय भी तो नहीं है। पढ़ते तो बच्चे हैं।' लेकिन उसने मुझे समझाया, 'सीखो', उसने कहा, 'इससे तुम और अधिक जानकारी प्राप्त करोगे। तब कोई तुम्हारा शोषण नहीं करेगा, तुम और अधिक शक्तिशाली होगे।'

"तो मैंने पढ़ना शुरू किया। अब मैं अपने जीवन में परिवर्तन को महसूस कर सकता हूं। मैं समझ सकता हूं कि मेरे हालात ऐसे क्यों हैं। यह मेरे लिए एक नई जागृति है। अब मैं अपने परिवार और पड़ोसियों से बात करता हूं। मैं उनसे कहता हूं, तुम भी साक्षर बनो। पढ़ना-लिखना सीखो।"

जुगरबेन ने पढ़ना-लिखना सीखा

सभा में चुप्पी छा गई—परेशान करने वाली चुप्पी। और फिर एक नवसाक्षर महिला, जुगरबेन पवार बोली, "मैं गरीब हो सकती हूं मगर मैं डरी हुई नहीं हूं। मेरा अपना स्वाभिमान है। मेरे पास भीलों की लंबी कहानी है। मेरी कहानी है जो यह बताती है कि जो लोग पहले अपनी जिंदगी के खुद मालिक थे, वे कैसे दूसरे लोगों के दास बन गए। मेरे पास विजय और पराजय की एक लंबी कथा है। मेरे पास इन जंगलों और इस धरती की कहानी है। अब मैं इस कहानी को अच्छी तरह समझती हूं। मुझे इसका अर्थ मालूम हो गया है।

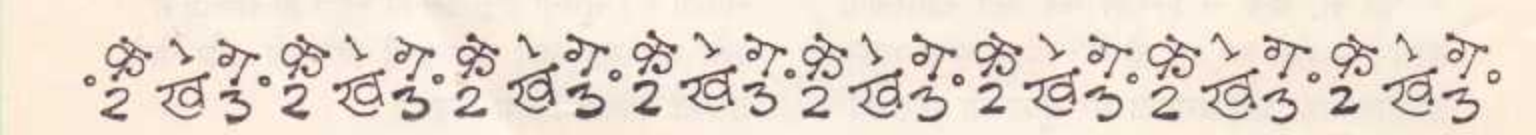

मैं जानती हूं कि इस कहानी से मैं कुछ सीख सकती हूं। अब मैं केवल एक चेहरा और नाम नहीं हूं—जो जीएगा और मरेगा और भुला दिया जाएगा। मेरे पास आवाज है। मैं लड़ सकती हूं।

"मेरा जीवन बहुत कठिन रहा है। इस भूमि पर अनाज उगाने के लिए मैंने कड़ी मेहनत की है। रोजी कमाने के लिए मैं चीनी की फैक्टरी में काम करने दूर सूरत तक गई हूं। मैं अपनी जड़ों से कट गई हूं, एक शरणार्थी की तरह।

"एक दिन मेरे पति ने मेरा हाथ पकड़ा और मुझे लिखना सिखाया। मैं भी औरों के साथ पढ़ना सीखने लगी। हर रात हम दिये की रोशनी में काम करते। हम छः या सात थे। मुझे याद है शुरू में लिखना सीखते वक्त मैं कितनी डरी हुई थी। यह आग को छूने के समान था। धीरे-धीरे मुझ में हिम्मत आयी और मैं पढ़ना, लिखना और गिनती सीखने लगी। ऐसा लगा जैसे आग को पकड़ लिया हो। लेकिन यह एक नई तरह की आग थी। ऐसी आग जो मुझे जलाएगी नहीं बल्कि ऐसी आग जो मुझे मजबूत बनाएगी। ऐसी चीज जो दूसरे लोगों के लिए मुझे प्रेरक बनाएगी। फिर मैंने जाना कि लिखना और पढ़ना और गिनती करना कई तरह से मेरी मदद कर सकते हैं। हम अपने आप सफर कर सकते हैं, खरीदारी कर सकते हैं और पैसे गिन सकते हैं। कोई मुझे बेवकूफ नहीं बना सकता। मुझे अंगूठा लगा कर अपने को हीन समझने की भी जरूरत नहीं रही। अब मैं दस्तखत कर सकती हूं। आप कभी नहीं समझ सकते कि इसका मेरे और मेरे लोगों के लिए क्या अर्थ है।"

मैं क्यों साक्षर बनाऊं?

"मैं किसी दूसरे को साक्षर क्यों बनाऊं?" मैंने अपने आप से पूछा, "यह तो समय बर्बाद करना है। मेरे पास करने के लिए कई महत्वपूर्ण काम हैं। मुझे अपने परिवार की परवरिश करनी है, मुझे खेतों में काम करना है। मेरे पास समय नहीं है।

"लेकिन फिर मैंने अपने चारों ओर देखा। मुझे क्या नजर आया? अत्याचार, पढ़े-लिखे प्रतिभाशाली लोग गरीब अनपढ़ लोगों पर जुल्म कर रहे थे," स्वयंसेवक देवजभाई कहते गए, "और ऐसा क्यों हो रहा था? सिर्फ इसलिए कि उन शिक्षित लोगों में पढ़ने-लिखने और नंबरों के बारे में सब कुछ सीख लेने की खास योग्यता थी। वे महत्वपूर्ण और उपयोगी जानकारी को अनपढ़ लोगों से दूर रख सकते थे। उनके पास अन्य लोगों की जिंदगी पर नियंत्रण रखने की ताकत थी। बहुधा वे इस ताकत का गलत इस्तेमाल करते थे।

"इसलिए मैंने सोचा कि शायद यह समय दूसरे लोगों को पढ़ाना शुरू करने का है। उन्हें जानकारी देनी होगी, उन्हें जगाना होगा ताकि वे जुल्म के शिकार होने से बच सकें। ताकि वे अपनी देखभाल कर सकें। ताकि वे आंख मूंद कर भरोसा करना छोड़ दें। ताकि वे शक्तिशाली बनें। ताकि वे भी उस सत्ता में हिस्सा बंटा सकें जो कुछ थोड़े से लोगों के पास है।

"मैंने अध्यापक से कहा, 'हां मैं स्वयंसेवक बनूंगा, इस तरह मैंने पढ़ाना शुरू किया। दिन भर मैं खेतों में काम करता और रात को लोगों को पढ़ाता।' मैं अब भी पढ़ाता हूं।

"कुछ समय तक पढ़ाने के बाद मुझे अहसास हुआ कि मैं अपनी पत्नी की उपेक्षा कर रहा हूं। वह भी तो अनपढ़ है। उसे भी शक्ति की जरूरत है, इसलिए मैंने उसे पढ़ाना शुरू किया। शुरू में उसे पढ़ने में संकोच होता था। इसलिए मैं उसे तब पढ़ाता था जब सब लोग सो जाते थे। हम लकड़ी का एक छोटा सा लट्ठा जला लेते और रात में काम करते। हम इतना थक जाते थे कि कभी-कभी हम सो जाते और लकड़ी का लट्ठा जल कर अंगारा बन जाता। जब सुबह की रोशनी घर में आती तब हमारी नींद खुलती। आखिर जब उसने पढ़ना सीख लिया तो मैंने उसमें आए परिवर्तन को देखा। औरों की तरह उसमें भी साहस आ गया था और वह अपनी बात कह सकती थी। चीनी की फैक्टरी से अपना वेतन लेते समय, दुकान से सामान खरीदते समय वह पैसे गिन सकती थी। यहां तक कि उसने तौलने के वजन (बाट) के बारे में भी सीख लिया था।

"हां, यह रोमांचक है। **मुझे विश्वास है कि साक्षरता से लोगों का जीवन बदल जाएगा।** जानते हैं अखबार पढ़ने का क्या मतलब है? इसका मतलब है बाहर की दुनिया के बारे में जानना। आज की दुनिया के बारे में खबरें पढ़ना, यह समझ पाना कि दूसरे लोग क्या महसूस करते हैं और कैसे रहते हैं। यह अहसास होना कि इन जंगलों और इस भूमि से परे भी जीवन है। यह सच जान लेना कि एक दिन इस धरती पर इतने ज्यादा लोग हो जाएंगे कि उनके लिए जगह बनाने के लिए इन वनों को भी समाप्त हो जाना होगा।"

अगर देश भर में चल रहा साक्षरता अभियान इन लोगों को इनकी ताकत को आवाज दे सके, विश्वास की भाषा दे सके, तो ऐसी गुणात्मक शक्ति पैदा होगी जो जीवन को बिल्कुल नया अर्थ दे देगी। यह ऐसी प्रक्रिया नहीं होगी जो लोककथाओं और पारंपरिक ज्ञान के भंडार को नष्ट करेगी बल्कि एक समुदाय को समझ कर उसे फलने-फूलने और विकसित होने में मदद करेगी। □

साभार : राष्ट्रीय साक्षरता मिशन